रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड ७: अगोचर (अदृश्य का दृश्य)

'अगोचर', अदृश्य का दृश्य, दिखते और अनदिखते पानियों का संगम। रमज़ों को खोलने का हौसला बांटते हुये गुरु नानक, मनुष्य को अपने अंदरूनी प्रवाह के साथ संपर्क कायम करने के लिये प्रेरित करते हैं। यह गुरु नानक के समकालीन संत को भी सजदा है जो एक अशुभ गांव में अपने निवास से समाज में जुझारू जज़्बा पैदा करते हैं।

सुण वडा आखै सभ कोइ ॥
केवड वडा डीठा होइ ॥
कीमत पाइ न कहिआ जाइ ॥
कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

सृजनहार की स्तुति सुनकर सभी उसकी बात करते हैं।
सृजनहार की स्तुति का अंदाज़ा कैसे हो सकता है?
उसका मूल्य अकथनीय और अथाह है।
इसे बयान करने में सक्षम मनुष्य उसके गुणों में ही लीन रहते हैं।
(राग आसा, गुरु नानक)

बहुत सारे लोग अकाल पुरख के बड्डपन की सिर्फ़ बातें करते हैं। उनकी विशालता की झलक पाने वाले मनुष्य एक कदम आगे बढ़ते हैं और कर्मों के माध्यम से उसके साथ एक हो जाते हैं।

अयोध्या से हम गुरु नानक के पदचिन्हों से थोड़ा घुमाव लेकर मगहर जा रहे हैं ताकि भगत कबीर की यादों का गुलदसता देखा जा सके। भगत कबीर का फ़लसफ़ा गुरु नानक से मेल खाता है।

भगत कबीर का हिंदू और मुस्लिम समुदायों पर ऐसा प्रभाव पड़ा था कि उनकी याद में एक ही स्थान के अंदर एक मंदिर बना है और एक मज़ार भी बना है। वह इस स्थान पर इस नश्वर संसार से विदा हो गये थे। मौजूदा दौर में सांप्रदायिक अलगाव की पालाबंदी मज़बूत हो रही है लेकिन यह स्थान अनेकता में एकता की नुमाइंदगी करता है।

भगत कबीर भक्ति लहर के इंक़लाबी संतों में सबसे ज़्यादा हवाला दिये जाने वालों में शामिल हैं। वह एक निर्धन जुलाहा परिवार से थे और अपने समय के सबसे प्रसिद्ध तर्ज़मानों में से एक हैं। मौजूदा दौर में भी उनके कलाम साहित्यिक अध्ययन के विषयों में शुमार हैं। उनका जन्म वाराणसी में वर्ष तेरह सौ अट्ठानबे में हुआ था। बचपन में दसतबरदार किऐ गऐ भगत कबीर को एक मुस्लिम परिवार ने पाला था। नीरू और नीमा पालन करने वाले माता-पिता थे जो जुलाहे का काम करते थे। भगत कबीर ने सन्यास के मुकाबले गृहस्थ का मार्ग चुना और जुलाहे के तौर पर कमाई करते हुये सांसारिक दायित्वों का निभाया। इस दौरान उनका ध्यान रूहानी गहराइयों में उतरा रहता था। भगत कबीर ने ज़ाहिर जगत से ऊँची रूहानी उड़ान भरने के लिये स्वामी रामानंद को अपना गुरु बनने के लिये मनाया, जो वाराणसी के सर्वोच्च कुल ब्राह्मणों में थे।

भगत कबीर इंकलाबी थे। उन्होंने मज़हबी इंतज़ामिया, मज़हब की अदाराबंदी और कर्मकांडों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई। वह इन्हें ख़्यालों की घेराबंदी मानते थे और उन्हें यह ज्ञान प्राप्ति के राह में रोड़ा लगते थे।

कबीर मंदिर के गायक: सतगुरु कबीर इस जीवन के सभी प्राणियों को चार दिनों के अतिथि के रूप में देखते हैं। वह एक शब्द में पूछते हैं कि आतिथ्य के इन चार दिनों में मनुष्य क्या कर रहा है। इसके साथ ही वह संदेश देते हैं,

अरु मन पहूना, गुरु बिन जईबा कऊने बाटी ॥
ईबा तो हिंदू, तुर्के बने हो, बीच भरम की टाटी ॥
अरु सवासा उनका स्वर्ग सिधारे ॥
(भगत कबीर)

हे मन तेरी हालत हवा जैसी है, विवेक के बिना तुम किस किनारे पर पहुंचोगे?
तुम ने अपनी पहचान हिन्दू या मुसलमान तक सीमित की है और दुविधा में फंसे हो।
इसके साथ अस्तित्व में से हस्ती मनफ़ी हो जाती है।
(भगत कबीर)

उन्होंने निराले कटाक्ष के अंदाज़ में संदेश दिये। अपनी 'उलट बाणी' में उन्होंने नैतिक सवाल पूछे लेकिन कोई जवाब नहीं दिया। इस प्रकार वह श्रोता में जवाब खोजने की जिज्ञासा पैदा करते हैं।

एक अचंभउ सुनहु तुम्म भाई ॥

देखत सिंघ चरावत गाई ॥
कहत कबीर जु इस पद बूझै ॥
राम रमत तिसु सभ किछ सूझै ॥
(राग आसा, भगत कबीर)

ओ भाई इस अचम्भे को सुनो!
मैंने शेर को गायों को चराते देखा है।
कबीर ने कहा कि जो इस रहस्मयी पहेली की जड़ समझ लेगा
वह रूहानियत में रम सकता है और सब कुछ की समझ हासिल कर सकता है।
(राग आसा, भगत कबीर)

वह नज़रीऐ को घुमा के उल्टे क्रम में दिलचस्प तरीके से पेश करते हैं। यह अंदाज़ एक खूबसूरत दृश्य का सृजन करता है और रूढ़िवादी सोच को सवाल के घेरे में लाता है। वह कहते हैं कि पहले बेटा पैदा होता है और फिर माँ पैदा होती है, शेर और गाय एक साथ चरते हैं और गुरु अपने अनुयायियों की चरण वंदना करते हैं। इन गहन शब्दों के साथ, उन्होंने 'ऊपर' और 'नीचे', 'उच्च' और 'तुछ', 'शुद्ध' और 'अशुद्ध', 'मानव' और 'पशु' की स्थापित दर्जाबंदी को चुनौती दी।

अपना पूरा जीवन वाराणसी में बिताने के बाद, भगत कबीर ने अंतिम दिनों में मगहर नामक एक बंजर गाँव में बसने का फ़ैसला किया। प्रचलित मिथक के अनुसार, वाराणसी में मृत्यु और दफ़न से 'मोक्ष' मिलना निश्चित था और मगहर गाँव में मृत्यु को 'मोक्ष' के मार्ग में बाधक माना जाता था।

बेख़ौफ़ भगत कबीर ने वृद्ध उम्र में इस मिथक भृम को फैलाने वाले मज़हबी इंतज़ामिया को चुनौती दी। उन्होंने वाराणसी छोड़ दिया और मगहर में मरना कबूल किया ताकि उनके विचारों की गंभीरता को खुले तौर पर प्रस्तुत किया जा सके। उन्होंने अपने समय के ऐसे अंधविश्वासों को दूर करने के लिये अथक प्रयास किया।

मगहर के बाद हम वाराणसी के अंदर लहरतारा के कबीर मठ जा रहे हैं। भगत कबीर की वाराणसी में गुज़ारी उम्र की याद में यह मरकज़ बनाया गया है।

हाड जरें जैसे लाकरी, केस जरें जैसे घास ॥
सब जग जलता देख के भए कबीर उदास ॥
(भगत कबीर)

मौत के बाद हड्डियां लकड़ी की तरह ज़ल जाती हैं और बाल घास की तरह ज़ल जाते हैं।
इर्षा की आग में ज़लते हुये जगत को देख कर कबीर उदास होते हैं।
(भगत कबीर)

गुरु नानक और भगत कबीर की बाणी में सामंजस्य है। उन दोनों ने मूर्ति पूजा की जगह अनुभव के ज़रिये विवेक की प्राप्ति और दीनदारी को प्राथमिकता दी। इसके बावजूद हम देखते हैं कि मौजूदा दौर में इन संतों के फ़लसफ़े को लागू करने की जगह उनकी मूर्तियों और तस्वीरों के प्रति श्रद्धा ज़्यादा है।

क़हत कबीर सुनो भाई साधू, सतगुरू नाम ठिकाना है ॥
रहना नहीं देस, बराना है ॥ यह देस बिराना है ॥
(भगत कबीर)

कबीर कहते हैं, सुनो रे साधो सच्ची सोच-विचार ही ठिकाना बनती है।
इस दुनिया में किसी को नहीं रहना यह दुनिया बेगाना देश है।
(भगत कबीर)

भगत कबीर और गुरु नानक समकालीन थे। 'जन्मसाखीयों' की कलाकृतों में उन्हें गोष्ठी करते हुये दिखाया गया है, लेकिन उनका मेल होने का कोई सबूत नहीं है। भगत कबीर के शबदों को गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल करना साबित करता है कि उन दोनों के फ़लसफ़े में मेल था।

महंत वीचर दास: बहुत सारे लोग मानते हैं कि कबीर साहिब और गुरु साहिब कई बार मिले थे। समाज में ऊंच-नीच और भेदभाव था। दोनों गुरुओं ने समाज को सुधारने के लिये ज़ोरदार प्रयास किये।

यह संसार ओस का बूंदा ॥
पवन लगे झड़ जाना है ॥
रहना नहीं देस, बिराना है ॥

यह देस बिराना है ॥
(भगत कबीर)

यह दुनिया तो बस ओस की एक बूंद मात्र है
जिसने हवा के बुलबुले के साथ गिर जाना है।
इस दुनिया में कोई नहीं रहेगा।
यह दुनिया बेगाना देश है।
(भगत कबीर)

महंत वीचर दास: साहिब का उपदेश था कि मनुष्य को अपने गुणों पर भरोसा करना चाहिये क्योंकि यह मांस किसी काम का नहीं है। इसलिये अवगुणों को छोड़कर सद्गुणों को फैलाओ। समाज की भलाई के लिये काम करें। हर तरह के उतार-चढ़ाव से ऊपर उठकर अपने रूहानी आत्म को पहचानें, यही मानव अस्तित्व का लक्ष्य है।

गुरु नानक और भगत कबीर अक्सर रूपकों में बात करते है। भारतीय ग्रंथों में दो ज़माने का ज़िक्र आता है, 'सतयुग' बीत चुका अच्छाई का ज़माना है और 'कलयुग' अवगुणों का समकालीन दौर है। गुर नानक और भगत कबीर के लिए, यह ज़माने किसी क्रमवार लड़ी में नहीं बंधे हैं बल्कि मन की हालत का संकेतक इज़हार हैं। जब मन उचाईयों को नापने की सोच से भरा होता है तब वह समा 'सतयुग' का दौर है। उसी प्रकार जब मन में बुरी सोच प्रबल होती है तो वह समा 'कलयुग' है।

कली अंदर नानका जिंनाँ दा अउतार ॥
(राग बिहागड़ा, गुरु नानक)

जब रूहानी संघर्ष का अंधकारमय काल होता है, नानक ने कहा कि तब नकारात्मक सोच हम पर हावी हो जाती है।
(राग बिहागड़ा, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना ने अयोध्या के बाद निज़ामाबाद और प्रयागराज का सफर किया।

अयोध्या में घाघरा नदी के तट से नाव में पूर्व की ओर रवाना हुये और वर्तमान उत्तर प्रदेश के टांडा में उतरे और फिर पैदल निज़ामाबाद गये।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये हम अयोध्या से निज़ामाबाद जा रहे हैं जो उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ ज़िले का कस्बा है।

निज़ामाबाद तमसा नदी के तट पर है जो अब केवल एक धारा मात्र रह गई है। जौनपुर के जनरल निज़ाम-उद-दीन के नाम पर इस शहर का नाम निज़ामाबाद रखा गया।

निर्मला संप्रदाय के उन्नीसवीं सदी के विद्वान पंडित तारा सिंह निरोतम ने 'गुरु तीरथ संग्रह' में लिखा है कि गुरु नानक अयोध्या से प्रयागराज के रास्ते में निज़ामाबाद से गुज़रे थे।

निज़ामाबाद गांव में पहले हम गुरुद्वारा चरण पादुका जा रहे हैं।

तमसा नदी से थोड़ी दूरी पर गुरुद्वारा चरण पादुका गुरु नानक की निज़ामाबाद में आगमन की याद में बनाया गया है। 'उदासीन' संप्रदाय के बाबा प्रेम दास उदासीन ने इस स्थान को शिक्षा के केंद्र के रूप में स्थापित किया। 'उदासियों' ने गुरु नानक के फ़लसफ़े को दूर-दूर तक फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दुर्भाग्य से, बीसवीं शताब्दी की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों ने गुरु नानक के प्यारों को विभाजित कर दिया है। इस वजह से कई सालों तक इस गुरुद्वारे में सेवा-संभाल का काम बंद रहा। हाल के वर्षों में इस गुरुद्वारे की व्यवस्था की गई है।

'उदासीन' संप्रदाय द्वारा लिखी गई 'गुरु ग्रंथ साहिब' की इकतीस बीड़ों को इस स्थान पर संरक्षित किया गया है। इन इकतीस बीड़ों की आवश्यक वैज्ञानिक देखभाल की जा रही है।

सतनाम सिंह: धन्य साहिब श्री गुरु नानक देव जी महाराज जी अपनी पहली उदासी दौरान यहां आये थे। उनके जाने के बाद यहां उदासी पंथ का बहुत प्रचार-प्रसार रहा। इकततीस हस्तलिखत ग्रंथ आज भी इस पावन स्थान पर मौजूद हैं।

स्थानीय 'कायस्थ' बिरादरी हिंदू धर्म के पदानुक्रम में उच्च जाति में आती है। 'उदासीन' संप्रदाय के प्रचार से 'कायस्थ' बिरादरी गुरु नानक के फ़लसफ़े के संपर्क में आई। वह उनके फ़लसफ़े की भावना से जुड़ी हुई है

जिसकी झलक पुरानी पीढ़ी में अब भी मिलती है लेकिन अब यह मान्यता घट रही है। हम एक स्थानीय 'कायस्थ' सज्जन से मिले ताकि स्थानीय बिरादरी पर पड़े गुरु नानक के संदेश के प्रभाव का अंदाज़ा लगाया जा सके।

चरणजीत सिंह गौड़: जब गुरु नानक देव जी यहां आये तो उनके विचारों से कायल होकर यहां के दो सौ पचास गौड़ कायस्थ लोगों में से एक सौ पचास ने उनके फ़लसफ़े को स्वीकार किया और उनके मार्ग का अनुसरण किया। हम गुरु ग्रंथ साहिब जी को मानते हैं। मेरी शादी कायस्थ परिवार में हुई लेकिन वह परिवार गुरु महाराज का अनुसरण करने वाला नहीं। शादी के बाद मेरी पत्नी यहां आई और उन्होंने गुरु ग्रंथ साहिब पढ़ना सीखा और पंज ग्रंथी साहिब का पाठ करती है। बच्चे भी मानते हैं और हर रोज़ गुरुद्वारे में नतमस्तक होते हैं।

हम अब तामसा नदी के किनारे जा रहे हैं जहाँ एक ही स्थान पर मंदिर और गुरुद्वारा बने हुये हैं।

अमरदीप सिंह: तमसा नदी के किनारे बसे निज़ामाबाद नामक अनोखे गांव में गुरु नानक के मज़हबी इतफ़ाक़ वाली सोच का अहसास होता है। यहां गुरुद्वारा, मंदिर और मस्जिद एक-दूसरे के करीब स्थित हैं।

समय के साथ, यह गुरुद्वारा वीरान हो गया। अब इसका इंतज़ाम गुरुद्वारा चरण पादुका वाली कमेटी द्वारा किया जाता है। इस गुरुद्वारे में अभी कोई संगत नहीं बैठती।

नाइ तेरै सहज नाइ सालाह ॥
नाउ तेरा अंमृत बिख उठ जाइ ॥
नाइ तेरै सभ सुख वसहि मन आइ ॥
(राग परभाती बिभास, गुरु नानक)

ध्यान में डूबे रहने से ही सहज और सलाहियत की प्राप्ति होती है।
ज्ञान ही अमृत है जो माया के ज़हर को निकालता है।
संयोग से मिलने वाला आनंद हर मन में बसता है।
(राग परभाती बिभास, गुरु नानक)

'नाम' के माध्यम से ही मन का चेतना के साथ मेल हो जाता है। मेरा ध्यान घूम फिर कर 'उदासीन' संप्रदाय के समर्पण की ओर जाता है, जिन्होंने इस स्थान पर गुरु नानक की याद में 'गुरु ग्रंथ साहिब' के इतने स्वरूप तैयार किये।

इस गाँव निज़ामाबाद में कुछ समय बिताने के बाद, गुरु नानक और भाई मरदाना ने प्रयाग का सफ़र शुरू किया जिसे बाद में इलाहाबाद कहा गया लेकिन हाल के दिनों में इसका नाम बदलकर प्रयागराज कर दिया गया है ।

अब हम निज़ामाबाद से प्रयागराज में झूसी जा रहे हैं।

'कुंभ मेला' बारह साल बाद लगता है। यह मेला प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में महत्वपूर्ण नदियों के तट पर अपने नियत समय पर लगता है लेकिन इन शहरों में पर्यटकों का आना-जाना लगा रहता है। 'कुंभ मेला' दो अक्षरों का मेल है। 'कुंभ' का अर्थ है 'गर्भ' जो ज़रख़ेज़ी या जीवन के स्रोत की नुमाइंदगी करता है। 'मेला' का अर्थ है त्योहार। ऐतिहासिक रूप से समय-समय पर लोगों में रूहानी सोच को बढ़ावा देने और सदाचारी जीवन जीने के लिये प्रेरित करने के लिये मेलों का आयोजन किया जाता रहा है। यहां दो नदियों का संगम है लेकिन इसे त्रिवेणी कहते हैं। तीसरी नदी पौराणिक सरस्वती है, जिसके बारे में माना जाता है कि वह अभी भी भूमिगत बहती है।

अमरदीप सिंह: गंगा-यमुना के संगम पर घाट के साथ झूसी नामक प्राचीन बस्ती है जो हिंदू धर्म के लिये सदियों से तीर्थ स्थल रहा है।

तीर्थ यात्रियों के साथ गोष्ठी करने के लिये गुरु नानक और भाई मरदाना गंगा-यमुना के संगम पर झूसी में रुके थे।

जब गुरु नानक 'त्रिवेणी' के तट पर ध्यान कर रहे थे तब रूहानी परामर्श के लिये लोग उनके आसपास इकट्ठा होने लगे। उनकी दुविधा यह थी कि कर्मकांड, ध्यान और पूजा-पाठ करने के बावजूद उनके मन में विस्माद का वास नहीं होता। गुरु नानक ने उत्तर दिया कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से मुक्त हुये बिना विस्माद नसीब नहीं होता।

लब कुता कूड़ु चूहड़ा ठग खाधा मुरदार ॥

पर निंदा पर मल मुख सुधी अगन क्रोध चंडाल ॥
रस कस आप सलाहणा ए करम मेरे करतार ॥
बाबा बोलीऐ पत होइ ॥
ऊतम से दर ऊतम कहीअह नीच करम बह रोइ ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

लोभ कुत्ते के समान है असत्य गंदगी है और ठग्गी मुर्दानोशी के समान है।
दूसरे की निन्दा करना दूसरे की गंदगी अपने मुंह में डालना है। गुस्सा चिता समान है।
स्वाद, लगाव और ख़ुशनूदी मेरे कुकर्म हैं, हे सृजनहार!
बाबा कहते हैं, ऐसे शब्द बोलो जो आदर से भीगे हुये हों।
जिनके कर्म अच्छे होते हैं, उनका रुतबा बुलंद होता है। नीच कर्म करने वाले दुखों में रोते हैं।
(सिरी राग, गुरु नानक)

मन की इच्छायें ही अम्लों का रास्ता तय करती हैं जिनसे होणी अपने नक्श निखारती है। अच्छी इच्छाओं से मन को चैन मिलता है और बुरे इरादे विपत्ति लाते हैं।

गुरु नानक के उत्तर से सहमत लोग यह समझने के लिये उत्सुक थे कि उनको रूहानी कर्मकांड के तरीके के अनुसार तीर्थयात्रा, स्वयं के कष्ट झेलने, तप करने और नग्न रहने के बावजूद अहंकार, द्वेष और शारीरिक पीड़ा से छुटकारा क्यों नहीं मिलता। गुरु नानक का उत्तर था कि सुकून तो सहजता से ही मिल सकता है जो मनुष्य का जन्मजात गुण है। उन्होंने समझाया कि बाहरी कर्मकांड मामूली मामले हैं। यदि मनुष्य को अंदरूनी इत्तफाक और परिवेश के साथ इत्तफाक कायम करना है तो उसे आंतरिक रूप से सामंजस्य बिठाना होगा।

ना सत दुखीआ ना सत सुखीआ ना सत पाणी जंत फिरहि ॥
ना सत मूँड मुडाई केसी ना सत पड़िआ देस फिरहि ॥
ना सत रुखी बिरखी पथर आप तछावहि दुख सहहि ॥
ना सत हसती बधे संगल ना सत गाई घाह चरहि ॥
जिस हथ सिध देवै जे सोई जिस नो देइ तिस आइ मिलै ॥
नानक ता कउ मिलै वडाई जिस घट भीतर सबद रवै ॥
(राग रामकली, गुरु नानक)

दुःख में सच नहीं है। सुख में सच नहीं है। पशुओं की तरह पानी में भटकना सच नहीं है।
सिर मुंडवाने में सच नहीं है। ग्रंथ पढ़ने और जगह-जगह भटकने में सच नहीं है।
वृक्षों, पौधों, पत्थरों में सच नहीं है। अपने-आप को कष्ट देने और दुःख झेलने में सच नहीं है।
जंजीर से बंधे हाथियों (कैद मन) में सच नहीं है। चरती गायों (खुले मन) में सच नहीं है।
जिनके हाथ ज्ञान प्राप्ति का कार्य करते हैं उनके दिलों मे विवेक का वास होता है।
(राग रामकली, गुरु नानक)

गुरु नानक के फ़लसफ़े की ख़ूबसूरती यह है कि यह एक साधारण जीवन प्रवाह से सच्चे कर्मों पर जोर देता है।

'त्रिवेणी' की यात्रा के दौरान हमे गुरु नानक की याद से जुड़ा कोई स्थान या कोई अन्य निशानी नहीं मिली।

स्थानीय बिरादरी ने बताया कि पहले 'त्रिवेणी' के घाट पर गुरु नानक की याद में झूसी में एक चबूतरा बना था, लेकिन यह नदी के बाढ़ के कारण बह गया था। इस जगह की देखभाल 'उदासीन' संप्रदाय के बाबा पंच नंद करते थे जो भगत भगवान की चौदहवीं पीढ़ी थे। भगत भगवान को गुरु नानक के फ़लसफ़े के प्रचार की ज़िम्मेदारी गुरु हर राय ने दी थी।

'त्रिवेणी' से हम गुरुद्वारा पक्की संगत जा रहे हैं जो प्रयागराज के मोहल्ला अहियापुर में है। यह गुरुद्वारा गुरु तेग़ बहादुर की याद में बनाया गया है। इस वक़्त गुरु नानक की प्रयागराज यात्रा की याद में कोई स्थान नहीं है, लेकिन कुछ रचनाएँ इस स्थान को गुरु नानक के साथ जोड़ती हैं।

हम अब 'पंचायती अखाडा बड़ा उदासीन' जा रहे हैं।

गुरु नानक के संदेश को प्रयागराज और गंगा पट्टी के दूर-दराज के क्षेत्रों में बीसवीं शताब्दी की शुरु तक 'उदासीन' संप्रदाय ने किया। पिछले सौ वर्षों में बहुत कुछ बदल गया है। गुरु नानक नामलेवा पहले एक ही छत्र के नीचे हुआ करते थे लेकिन अब वह बिखर गये हैं। पुराने सांस्कृतिक इत्तेफ़ाक़ के सूत्रों की तलाश में हम 'पंचायती अखाड़ा बड़ा उदासीन' में जा रहे हैं। मैंने इस स्थान पर कई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज देखे जो साबित करते हैं कि गुरु नानक कभी इस बिरादरी के केंद्रीय शख्सियत थे।

समाज के बटवारे के बारे में सोचते हुये मेरे मन में यह सवाल आता है कि क्या हम सब गुरु नानक की वहदत वाली सोच से दूर हो गये हैं?

'मैं' और 'मेरे' के संघर्ष में कई लोग दुःख में नष्ट हो गये हैं।

मेरी मेरी कर मुए विण नावै दुख भाल ॥
(राग रामकली दखणी, गुरु नानक)

हम अहंकार में डूबे हुये 'मैं' और 'मेरे' के झगड़े में फंसे हुये हैं। हम ना समझते हुये दुःखों को बुला रहे हैं।
(राग रामकली दखणी, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड ७: अगोचर (अदृश्य का दृश्य)

ये चर्चा संकेतक गुरु नानक की अयोध्या से इलाहाबाद तक की यात्रा की ऐतिहासिक और दार्शनिक पृष्ठभूमि को खूबसूरती से प्रस्तुत करते हैं। ऐतिहासिक रूप से, ये उनके विविध समुदायों के साथ हुए संवाद, उनके मार्ग पर स्थापित स्मारक स्थलों, तथा गंगा के क्षेत्र में उनकी विचारधारा के संरक्षण और प्रचार में उदासीन संन्यासियों की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त, ये भगत कबीर की विरासत की भी खोज करते हैं, जिनकी दार्शनिक समानता गुरु नानक के साथ गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित सबदों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। दार्शनिक रूप से, ये संकेतक आध्यात्मिक गुरुओं के अनुभवजन्य ज्ञान को केवल औपचारिक कर्मकांडों से अधिक महत्वपूर्ण मानने की साझा दृष्टि, धार्मिक रूढ़िवादिता की निडर आलोचना, पारंपरिक सोच को चुनौती देने के लिए अद्वितीय साहित्यिक दृष्टिकोण, तथा मानवता की मौलिक एकता को पहचानकर सामाजिक विभाजनों को समाप्त करने की प्रक्रिया की विवेचना करते हैं। गुरु नानक की इस क्षेत्र में भौगोलिक और आध्यात्मिक यात्रा उनके समय की धार्मिक और सामाजिक वास्तविकताओं को प्रस्तुत करती है।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक और भगत कबीर के बीच संबंध का ऐतिहासिक प्रमाण क्या है?

एपिसोड बताता है कि यद्यपि भगत कबीर और गुरु नानक समकालीन थे, और कुछ 'जनमसाखी' चित्रों में उन्हें संवाद करते हुए दिखाया गया है, महंत विचार दास कहते हैं कि कई लोग मानते हैं कि कबीर साहिब और नानक साहिब ने कई बार मुलाकात की। हालांकि, ऐसे मिलने के कोई निर्णायक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। कथावाचक निष्कर्ष निकालते हैं कि दार्शनिक रूप से उनके विचार अवश्य मिले, क्योंकि भगत कबीर के कई सबद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में अंकित हैं। हम उनके साझा विचारों की गहराई को कैसे समझ सकते हैं, भले ही उनकी प्रत्यक्ष मुलाकात का कोई प्रमाण न हो? और यह विभिन्न परंपराओं के बीच १५वीं सदी के भारत में विचारों के संचार के बारे में क्या संकेत देता है?

२. भगत कबीर के वाराणसी से मघार जाने का दार्शनिक महत्व क्या था?

एपिसोड के अनुसार, वाराणसी में अपना जीवन व्यतीत करने के बाद, भगत कबीर ने अपने अंतिम दिनों में एक उजाड़ गाँव मघार जाने का निर्णय लिया। एक प्रचलित मिथक के अनुसार, वाराणसी में मृत्यु और दाह संस्कार होना 'मोक्ष' प्राप्ति की गारंटी माना जाता था, जबकि मघार में मृत्यु को मोक्ष प्राप्ति में बाधा माना जाता था। पाठ में बताया गया है कि इस अंधविश्वास को बढ़ावा देने वाले पुरोहितों और इस मिथक को चुनौती देने के लिए, भगत कबीर ने एक सशक्त संदेश देने के लिए वाराणसी छोड़कर मघार में प्राण त्यागने का निश्चय किया। उन्होंने अपने समय के कई ऐसे अंधविश्वासों को निडर होकर समाप्त करने का प्रयास किया। धार्मिक रूढ़िवादिता को चुनौती देने के इस सुनियोजित निर्णय ने भगत कबीर के धार्मिक सुधार के दृष्टिकोण को कैसे प्रतिबिंबित किया, और इस कार्य ने उनके समाज की मुक्ति के वास्तविक अर्थ की समझ पर क्या प्रभाव डाला?

३. गंगा के क्षेत्र में गुरु नानक की विचारधारा के प्रसार में उदासीन संन्यासियों ने कैसे योगदान दिया?

एपिसोड इस बात पर जोर देता है कि 'उदासीन' (संन्यासी) गुरु नानक की विचारधारा को दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुके हैं। निज़ामाबाद के गुरुद्वारा चरण पादुका में, 'गुरु ग्रंथ साहिब' की ३१ हस्तलिखित प्रतियाँ, जिन्हें 'उदासीन' संन्यासियों द्वारा लिखा गया था, अब पुनः संरक्षित की गई हैं। संरक्षक सतनाम सिंह बताते हैं कि बाद में 'उदासीन' संप्रदाय ने गुरु नानक की विचारधारा के प्रचार के लिए बड़े प्रयास किए। 'गुरु ग्रंथ साहिब' की ३१ प्रतियाँ, जो उन्होंने हस्तलिखित रूप में तैयार की थीं, अब भी यहाँ सुरक्षित हैं। त्रिवेणी (तीन नदियों का संगम) पर, गुरु नानक से जुड़े एक स्थल की देखरेख बाबा पंच नंद द्वारा की गई, जो भगत भगवान के १४वें उत्तराधिकारी थे। भगत भगवान एक 'उदासीन' संन्यासी थे, जिन्हें सातवें सिख गुरु, गुरु हर राय द्वारा गुरु नानक की विचारधारा के प्रसार की सेवा सौंपी गई थी। यह प्रमाण कैसे दर्शाते हैं कि गुरु नानक के संदेश को सुरक्षित रखने और प्रचारित करने में उदासीन संप्रदाय ने ऐतिहासिक रूप से क्या भूमिका निभाई, और किन कारकों ने उन्हें इस मिशन के प्रति विशेष रूप से समर्पित किया?

४. स्थानीय समुदायों, जैसे कायस्थों, ने गुरु नानक की आध्यात्मिक अवधारणाओं पर कैसी प्रतिक्रिया दी?

एपिसोड बताता है कि स्थानीय 'कायस्थ' समुदाय, जो निज़ामाबाद के उच्च जाति के हिंदू थे, को 'उदासीन' (संन्यासियों) द्वारा गुरु नानक की विचारधारा से परिचित कराया गया था। गुरु नानक के संदेश से प्रभावित होकर, स्थानीय 'कायस्थ' समुदाय ने उनकी विचारधारा को आत्मसात किया, लेकिन अब यह अनुशीलन कम हो गया है और केवल पुरानी पीढ़ी में ही देखा जाता है। स्थानीय कायस्थ चरनदीप सिंह गौर एक ऐतिहासिक तथ्य साझा करते हैं कि जब गुरु नानक यहाँ आए, तो उनकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर,

लगभग २५० 'गौर कायस्थ' (हिंदू सामाजिक संरचना में एक जाति) निवासियों में से १५० ने उनकी विचारधारा को अपनाया और उनके मार्ग का अनुसरण किया। वह आगे बताते हैं कि उन्होंने एक 'कायस्थ' परिवार में विवाह किया, जो गुरु नानक का अनुसरण नहीं करता था, लेकिन जब उनकी पत्नी यहाँ आईं, तो उन्होंने 'गुरु ग्रंथ साहिब' पढ़ना शुरू किया और अब प्रतिदिन पाँच पाठ का पाठ करती हैं। उनके बच्चे भी इसका पालन करते हैं। यह विवरण कैसे दर्शाता है कि विभिन्न समुदायों ने ऐतिहासिक रूप से गुरु नानक की विचारधारा को अपनाया, और समय के साथ यह संबंध कैसे विकसित हुआ?

५. एपिसोड में कुंभ मेले के ऐतिहासिक संदर्भ और महत्व को कैसे वर्णित किया गया है?

एपिसोड बताता है कि 'कुंभ मेला' एक ऐसा पर्व है, जो १२ वर्षों के चक्र में चार प्रमुख तीर्थस्थलों - इलाहाबाद, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में आयोजित होता है, जो प्रमुख नदियों के किनारे स्थित हैं। यह मेले के व्युत्पत्ति को भी समझाता है: 'कुंभ' का अर्थ एक गर्भ है, जो उर्वरता और जीवन उत्पन्न करने वाले स्रोत का प्रतीक है। 'मेला' का अर्थ उत्सव है। यह उत्सव ऐतिहासिक रूप से आध्यात्मिक विचारों पर चर्चा और सदाचारी जीवन जीने के लिए स्थापित किया गया था। एपिसोड इस स्थल की भौगोलिक महत्ता पर भी प्रकाश डालता है कि यद्यपि यहाँ केवल दो नदियाँ मिलती हैं, फिर भी इसे 'त्रिवेणी' कहा जाता है, क्योंकि तीसरी पौराणिक नदी सरस्वती को अब भी भूमिगत प्रवाहित माना जाता है। यह संदर्भ हमें गुरु नानक की इस स्थल की यात्रा के महत्व को समझने में कैसे सहायता करता है, और ऐसा क्या था जो उन्हें इस स्थान पर तीर्थयात्रियों के साथ संवाद करने के लिए आकर्षित कर सकता था?

६. गुरु नानक की यात्रा को समर्पित ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण को किन कारकों ने प्रभावित किया है?

एपिसोड में गुरु नानक से जुड़े स्थलों के संरक्षण को प्रभावित करने वाले कई कारकों का उल्लेख किया गया है। निज़ामाबाद के गुरुद्वारा चरण पादुका के संदर्भ में बताया गया कि २०वीं सदी के प्रारंभिक वर्षों की सामाजिक-राजनीतिक घटनाओं ने गुरु नानक के अनुयायियों को विभाजित कर दिया, जिसके कारण वर्षों तक इस गुरुद्वारे का रखरखाव बाधित रहा। हाल के वर्षों में इस गुरुद्वारे को पुनर्जीवित किया गया है। तामसा नदी के किनारे स्थित एक अन्य गुरुद्वारे का अब गुरुद्वारा चरण पादुका की देखरेख करने वाली समिति द्वारा रखरखाव किया जा रहा है, लेकिन यह गुरुद्वारा अब भी कोई सामूहिक धार्मिक आयोजन नहीं करता। ये प्रवृत्तियाँ गुरु नानक की यात्राओं की ऐतिहासिक स्मृति को संरक्षित करने में आने वाली चुनौतियों के बारे में क्या बताती हैं, और किस प्रकार सामाजिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय कारकों ने इन स्थलों के नष्ट होने या पुनर्जीवन में योगदान दिया है?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. **गुरु नानक और भगत कबीर के दार्शनिक दृष्टिकोण धार्मिक रूढ़िवादिता को संबोधित करने में कैसे तुलना करते हैं?**
एपिसोड बताता है कि गुरु नानक और भगत कबीर ने अपनी वाणियों में अनुभवजन्य ज्ञान और भक्ति के महत्व को मूर्तिपूजा और प्रतीकों से ऊपर रखा है। भगत कबीर को एक गैर-परंपरावादी के रूप में दर्शाया गया है, जिन्होंने पुरोहितों, संस्थागत धर्म और अनुष्ठानिक प्रथाओं के विरुद्ध कड़ा विरोध किया, क्योंकि वे स्वतंत्र विचार और ज्ञान प्राप्ति में बाधा बनते थे। इसी प्रकार, जब त्रिवेणी में लोगों ने गुरु नानक से पूछा कि धार्मिक क्रियाकलापों का पालन करने के बावजूद वे अपनी समस्याओं से क्यों नहीं उबर पा रहे हैं, तो उन्होंने उत्तर दिया कि बाह्य औपचारिकताएँ महत्वहीन हैं। आत्मिक और सामाजिक सामंजस्य के लिए आंतरिक रूप से स्वयं को सही दिशा में उन्मुख करना आवश्यक है। दोनों संतों ने समाज को एकजुट करने और सुधारने के लिए अत्यधिक प्रयास किए। इन समानांतर आलोचनाओं से उस समय की सामाजिक प्रवृत्तियाँ कैसे प्रतिबिंबित होती हैं, और किस विशिष्ट दृष्टिकोण से दोनों ने धार्मिक ध्यान को बाहरी अनुष्ठानों से आंतरिक परिवर्तन की ओर मोड़ने का प्रयास किया?

२. **स्थापित सामाजिक श्रेणियों को चुनौती देने में भगत कबीर की 'उलट वाणी' (विपरीत संदेश) शैली का क्या महत्व है?**
एपिसोड में भगत कबीर की विशिष्ट साहित्यिक शैली, विशेष रूप से उनकी 'उलट वाणी' या विपरीत संदेशों का उल्लेख किया गया है। उनकी वाणियाँ एक अनूठे व्यंग्यात्मक ढंग का उपयोग करती हैं और अनसुलझे नैतिक प्रश्न उठाती हैं, जिससे श्रोताओं को अपने उत्तर स्वयं खोजने के लिए प्रेरित किया जाता है। उदाहरण के लिए, कबीर की एक वाणी कहती है कि पहले संतान जन्म लेती है, फिर माता, कि सिंह गाय के साथ चरता है, और कि गुरु शिष्य को प्रणाम करता है। यह पाठ्य सामग्री विरोधाभासों का रोचक चित्रण प्रस्तुत करती है और परंपरागत कट्टरपंथी सोच को प्रभावी रूप से चुनौती देती है। इस प्रकार, कबीर ने 'ऊँच' और 'नीच', 'शुद्ध' और 'अशुद्ध', 'मनुष्य' और 'पशु' जैसी स्थापित श्रेणियों पर प्रश्न उठाए। उनकी यह साहित्यिक तकनीक पारंपरिक सोच को विघटित करने के लिए एक दार्शनिक उपकरण के रूप में कैसे कार्य करती है, और यह किस प्रकार मध्यकालीन भारतीय समाज में मौजूद विशिष्ट श्रेणियों को चुनौती देने का प्रयास करती है?

३. **गुरु नानक और भगत कबीर अपने जीवन की क्षणभंगुरता की समझ को कैसे व्यक्त करते हैं?**

एपिसोड में भगत कबीर की एक वाणी प्रस्तुत की गई है, जिसमें वे संसार को ओस की बूंद के समान बताते हैं, जो हवा के झोंके से समाप्त हो जाती है। वे इस तथ्य को रेखांकित करते हैं कि हम इस संसार में स्थायी रूप से नहीं रह सकते; यह दुनिया एक परदेश है। एक अन्य सबद में वे कहते हैं कि सच्चा ज्ञान एक लंगर के समान है। महंत वीचार दास यह भी बताते हैं कि कबीर ने यह प्रतिपादित किया कि मनुष्य के सद्गुण अधिक महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि शरीर अंततः किसी उपयोग का नहीं रहता। इसलिए, व्यक्ति को बुरी आदतों का त्याग कर अच्छे गुणों को अपनाना चाहिए। इसी प्रकार, गुरु नानक भी यही संदेश देते हैं कि 'मैं' और 'मेरा' के अहंकार में फंसकर व्यक्ति रुहानी मृत्यु को प्राप्त करता है। जीवन की इस क्षणभंगुरता पर उनके विचार उनकी रुहानी दर्शन को कैसे आकार देते हैं, और वे इस नश्वरता की समझ से क्या व्यावहारिक निष्कर्ष निकालते हैं?

४. गुरु नानक के त्रिवेणी में आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि मानसिक शांति प्राप्त करने की बाधाओं को कैसे संबोधित करती है?

त्रिवेणी में, जब लोगों ने पूछा कि धार्मिक क्रियाकलापों का पालन करने के बावजूद वे मानसिक शांति क्यों प्राप्त नहीं कर पाते, तो गुरु नानक ने उत्तर दिया कि वासना, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की बेड़ियाँ मानसिक शांति प्राप्त करने में सबसे बड़ी बाधाएँ हैं। इनके बिना व्यक्ति आनंद का अनुभव नहीं कर सकता। इस सत्य को उनकी एक वाणी में स्पष्ट किया गया है, जिसमें वे कहते हैं कि लोभ कुत्ते के समान है, मिथ्या बात गंदगी के समान है, और धोखा देना सड़े हुए मांस को खाने के समान है। दूसरों की निंदा करना ऐसा है जैसे किसी और की गंदगी को अपने मुँह में डालना। एपिसोड यह भी बताता है कि मन की प्रवृत्तियाँ व्यक्ति के कार्यों को प्रभावित करती हैं और उसके भविष्य को आकार देती हैं। श्रेष्ठ प्रवृत्तियाँ शांति की ओर ले जाती हैं, जबकि निम्न प्रवृत्तियाँ दुःख का कारण बनती हैं। मनोवैज्ञानिक बाधाओं का यह विश्लेषण रुहानी विकास के लिए एक व्यावहारिक रूपरेखा कैसे प्रस्तुत करता है, और यह गुरु नानक के समय की पारंपरिक धार्मिक मान्यताओं से किस प्रकार भिन्न है?

५. गुरु नानक का अनुष्ठानिक प्रथाओं बनाम आंतरिक परिवर्तन पर क्या दृष्टिकोण है?

जब त्रिवेणी में तीर्थयात्रियों ने पूछा कि तीर्थ करने, तपस्या करने, स्वयं को कष्ट देने और नग्न रहने के बावजूद वे अपने अहंकार, बुरी प्रवृत्तियों और शारीरिक कष्टों से मुक्त क्यों नहीं हो पा रहे हैं, तो गुरु नानक ने उत्तर दिया कि शांति केवल संतुलन के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है, जो मनुष्य में अंतर्निहित गुण है। उनकी आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि स्पष्ट करती है कि न तो दुख में कोई सत्य है और न ही सुख में। बिना उद्देश्य के जल में पशुओं की तरह भटकने, सिर मुंडवाने, मात्र ग्रंथों का अध्ययन करने और इधर-उधर भटकने में कोई सत्य नहीं है। यह एपिसोड गुरु नानक के दर्शन की सुंदरता को रेखांकित करता है,

जो सरल जीवन और सही कर्मों से उत्पन्न सकारात्मक प्रवाह के माध्यम से आत्मिक उन्नति के महत्व को दर्शाता है। ये अवधारणाएँ रुहानी अभ्यास को बाहरी अनुष्ठानों से आंतरिक विकास की ओर कैसे पुनर्निर्देशित करती हैं, और पारंपरिक तपस्वी प्रथाओं के लिए गुरु नानक क्या विकल्प प्रस्तुत करते हैं?

६. गुरु नानक और भगत कबीर पारंपरिक युग अवधारणाओं (सतयुग और कलियुग) की पुनर्व्याख्या आध्यात्मिक सत्यों को व्यक्त करने के लिए कैसे करते हैं?

एपिसोड स्पष्ट करता है कि गुरु नानक और भगत कबीर अक्सर रूपकों में बात करते थे। 'सतयुग', जो सकारात्मकता का बीता हुआ युग है, और 'कलियुग', जो नकारात्मकता का वर्तमान युग है, ये भारतीय ग्रंथों में उल्लिखित समय की अवधारणाएँ हैं। गुरु नानक और भगत कबीर के लिए, ये केवल रैखिक समय-रेखाएँ नहीं थीं, बल्कि मानसिक स्थिति की प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियाँ थीं। जब भी मन सकारात्मक विचारों के प्रभाव में होता है, वह 'सतयुग' होता है। इसी प्रकार, जब भी मन नकारात्मक विचारों के प्रभाव में होता है, वह 'कलियुग' होता है। गुरु नानक की वाणी यह दर्शाती है कि रुहानी संघर्ष के समय नकारात्मकता प्रधान हो जाती है। पारंपरिक लौकिक समय चक्रों की इस पुनर्कल्पना से हमारी धारणा बाह्य ऐतिहासिक घटनाओं के रूप में देखने से हटकर इन्हें गहरे आंतरिक मानसिक अनुभवों के रूप में समझने की ओर कैसे स्थानांतरित होती है, और इसका धार्मिक प्रथाओं को समझने पर क्या प्रभाव पड़ता है?

७. गुरु नानक के जीवन में 'नाम' (स्मरण) का दार्शनिक महत्व क्या है?

एपिसोड बताता है कि 'नाम', अर्थात स्मरण की साधना, मन को चेतना से जोड़ने में सहायक होती है। गुरु नानक की वाणी स्पष्ट करती है कि मनन से संतुलन प्राप्त होता है और आत्म-चिंतन से सम्मान प्राप्त होता है। ज्ञान वह अमृत है, जो मोह-माया के विष को दूर करता है। साक्षात्कार वह आनंद उत्पन्न करता है, जो मन में निवास करता है। गुरु नानक के दर्शन में स्मरण की यह अवधारणा एक केंद्रीय रुहानी अभ्यास के रूप में कैसे कार्य करती है, और यह अहंकार पर विजय प्राप्त करने और आंतरिक परिवर्तन का अनुभव करने की उनकी व्यापक अंतर्दृष्टि से कैसे जुड़ती है?

८. गुरु नानक और भगत कबीर के संदेश सामाजिक विभाजनों और भेदभाव को कैसे संबोधित करते हैं?

महंत वीचार दास बताते हैं कि मानवता को निम्न और उच्च के भेद के आधार पर विभाजित किया गया। दोनों संतों ने समाज को एकजुट करने और सुधारने के लिए अत्यधिक प्रयास किए। वे आगे बताते हैं कि कबीर ने यह प्रतिपादित किया कि मनुष्य के सद्गुण अधिक महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि शरीर अंततः किसी उपयोग का नहीं रहता। इसलिए, बुरी आदतों को त्यागें और अच्छे गुणों को अपनाएँ। समाज के कल्याण

के लिए कार्य करें और भेदभाव से ऊपर उठें। अपनी आध्यात्मिक पहचान को पहचानें, क्योंकि वही मानव जीवन का एकमात्र लक्ष्य है। एपिसोड यह भी बताता है कि भगत कबीर का प्रभाव धार्मिक सीमाओं से परे था, जैसा कि मगहर में देखा जाता है, जहाँ उनकी स्मृति में एक ही परिसर में मंदिर और समाधि दोनों निर्मित हैं। आज के समय में, जब समुदाय धार्मिक विश्वासों के आधार पर अधिकाधिक खंडित हो रहे हैं, यह तीर्थस्थल विविधता में एकता का प्रतीक है। एपिसोड के अंत में, वाचक यह सोचता है कि क्या हम सभी गुरु नानक की एकता की दृष्टि से भटक गए हैं, क्योंकि उनकी वाणी कहती है कि 'मैं' और 'मेरा' के अहंकार में डूबकर मनुष्य रुहानी रूप से मर जाता है। ये संदेश सामाजिक विभाजनों को दूर करने के लिए एक दार्शनिक आधार कैसे प्रदान करते हैं, और अपने समाज में भेदभाव को संबोधित करने के लिए इन्होंने कौन-कौन से विशिष्ट दृष्टिकोण अपनाए?